आर. एन. आई. 31109/77

JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संस्थापक सम्पादक
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक
डॉ. संजीवकुमार गोधा

सह-सम्पादक
पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

वर्ष : 45, अंक : 3

मई (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये | 2 मई 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

#ARHAM

THE GREATEST JAIN FEST

14 to 17 April 2022

Arham fest 2022

राजस्थान जैन सभा द्वारा 'यशस्वी जैन गौरव' से अलंकृत डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

महावीर जयंती के अवसर पर आयोजित अर्हं फेस्ट में देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर को वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार, सहस्राधिक विद्वान तैयार करने, श्रुत-साधना में सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने, विश्वभर को सम्यग्ज्ञान से आलोकित करने एवं जैन साहित्य की श्रीवृद्धि करने हेतु राजस्थान के प्रतिनिधि संगठन **राजस्थान जैन सभा** द्वारा 15 अप्रैल 2022 को बिरला ऑडिटोरियम, जयपुर के विशाल सभागृह में **'यशस्वी जैन गौरव'** की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष श्री सुभाषचंदजी जैन एवं महामंत्री श्री मनीषजी वैद, मंत्री श्री विनोदजी जैन कोटखावदा, श्री शैलेन्द्रजी शाह ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को भगवान महावीर का चित्र, विशाल प्रशस्ति पत्र, साफा, शॉल, श्रीफल आदि भेंटकर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, श्रीमती रचनाजी वैद आदि उपस्थित रहे।

विशाल प्रशस्ति-पत्र के साथ डॉ. भारिल्ल

संपादक के नजरिए से...

अर्हं फेस्ट इज बेस्ट

यह तो सर्व विदित ही है कि जयपुर में स्थित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सदैव अग्रणी रहा है; साथ ही समय के बदलते दौर में अध्यात्म को विविध रोचक आयामों द्वारा प्रस्तुत करता रहा है। इसी के उपक्रमों में अर्हं पाठशाला विगत तीन वर्षों की अल्प अवधि में ही विश्वविख्यात हो गई है, जो देश–विदेश में बच्चों को तत्त्वज्ञान के प्रति जागरुक कर जीवन जीने की कला सिखा रही है।

अर्हं पाठशाला के त्रि–वर्षीय सफल संचालन के उपलक्ष्य में हाल ही में आयोजित **अर्हं फेस्ट** को देश के कोने–कोने से पधारे साधर्मियों द्वारा बहुत सराहा गया। यह फेस्टीवल एक अनूठे ढंग से तैयार किया गया अध्यात्म का मेला था, जिसमें कुछ अलग प्रकार से युवाओं व बच्चों को तत्त्वज्ञान से जोड़ने का प्रयास किया गया।

इसमें नए लोगों को नए तरीके से जैन धर्म के सिद्धान्त सिखाने के लिए कुछ अलग हटके अद्भुत प्रयोग किए गए। जहाँ माल तो वही था, बस पैकिंग नई थी। आधुनिकता के रंग में रंगी आज–कल की युवा पीढ़ी प्रवचन, कक्षाओं एवं शिविरों के नाम से ही दूर भागती है; अत: इस आयोजन में प्रवचन को सेमिनार एवं कक्षाओं को एक्टिविटि के रूप में बदलकर इस चार–दिवसीय लघु शिविर को फेस्टीवल में तब्दील किया गया।

इसे मेले का रूप देने के लिए स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका व श्री सर्वज्ञजी भारिल्ल द्वारा स्मारक परिसर को उसीतरह की साज–सज्जा से सुसज्जित कर जगह–जगह तत्त्वज्ञान से भरपूर प्रदर्शनियों युक्त सैल्फी पॉइन्ट बनाए गए, जिन्हें देखकर स्मारक परिसर में प्रवेश करने वालों को ऐसा लगता था कि हम किसी फेस्टीवल में आए हैं। जो लोग इसमें सम्मिलित हुए उन्होंने यह महसूस भी किया कि यह एक शिविर नहीं; अपितु फेस्टिवल ही था। यह एक ऐसा त्यौहार था, जिसमें भक्ति, दर्शन, हैरिटेज वॉक, सेमिनार, नाटक, जुलूस, नाच–गान, नुक्कड़ नाटिका, जयपुर भ्रमण, तीर्थ दर्शन, म्यूजिकल कन्सर्ट, टॉक विथ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि अनेक विविधताओं का संगम था। इन सबने इस अर्हं फेस्ट में चार चाँद लगा दिए।

जो वीतरागी तत्त्वज्ञान भगवान महावीरस्वामी से आचार्य कुन्दकुन्ददेव एवं पण्डित टोडरमलजी से गुरुदेवश्री एवं दादा (डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल) के माध्यम से हम तक आया है, अब उसे सब तक पहुँचाना है, इसलिए जो लोग तत्त्वज्ञान से बिल्कुल ही अनभिज्ञ हैं – ऐसे युवाओं को एकत्रित कर उन्हें तत्त्वज्ञान से जोड़ना ही इस अर्हं फेस्ट का उद्देश्य था।

हम अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में काफी सफल हुए; क्योंकि इस फेस्ट में अनेक ऐसे युवा साथी एवं बच्चों ने भाग लिया जो मुमुक्षु परिवारों से सम्बन्धित नहीं थे। कुछ लोग ऐसे भी थे, जिनके जीवन का यह पहला फिजिकल धार्मिक आयोजन था।

अब आगे आने वाले समय में हम इस फेस्ट को और अधिक उत्साह के साथ लगाने का प्रयत्न करेंगे। मैं आप सभी से कहना चाहता हूँ कि अब जब भी यह फेस्ट लगाया जाए, आप उसमें स्वयं सम्मिलित होकर अन्य नए लोगों को भी तत्त्वज्ञान से जोड़ें।

मैं पाठकों को यह भी बताना चाहता हूँ कि जिन्होंने इस चार दिन के अद्भुत फेस्ट का प्रत्यक्ष लाभ लिया है, वे निश्चित ही वर्ष भर हमारी इस अर्हं पाठशाला का लाभ लेने के लिए कृत–संकल्पित हो गए हैं। ध्यान रहे अर्हं पाठशाला आपको, आपकी भाषा में, आपके चुनिंदा दिन में, आपके समय पर एवं आपकी रुचि के अनुसार तत्त्वज्ञान के विषयों को रोचक शैली में पढ़ाती है। बस आपको तत्त्वज्ञान का लाभ लेने के लिए तैयार रहना है। हमारे कुशल अध्यापकों की टीम निरन्तर आपको तत्त्वज्ञान से जोड़ने के लिए तैयार है।

अर्हं फेस्ट के रूप में तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए किया गया यह नवीन प्रयोग अपने आप में बड़े–बड़े आयोजनों से भी अधिक चुनौतिपूर्ण था; क्योंकि हमारा आयोजन किसी एक स्थान पर या एक छत के नीचे नहीं था। हम आज कहीं और तो कल कहीं और थे, सुबह कहीं और तो शाम को कहीं और थे। ११ बड़ी बसों के विशाल काफिले में ५५० से अधिक साधर्मियों को साथ लेकर जयपुर शहर के चार अलग–अलग स्थानों पर एक ही दिन में विविध एक्टिविटि को समय से सम्पन्न कराना इस फेस्ट की अभूतपूर्वता सफलता रही।

इसमें कोई दोराह नहीं कि जब तत्त्वज्ञान के प्रति समर्पित होकर निस्वार्थ भावना से मिलजुल कर कार्य किया जाता है तो अवश्य ही सफलता मिलती है। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं सर्वज्ञजी भारिल्ल के कुशल निर्देशन के बिना इतना बड़ा आयोजन संभव ही नहीं था। अर्हं पाठशाला के संयोजक एवं अर्हं फेस्ट के परिकल्पनाकार पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, विदुषी प्रतीतिजी मोदी, एवं श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के सभी होनहार छात्रों ने इस फेस्ट की सफलता के लिए दिन–रात एक कर दिए। इस प्रसंग पर वर्ष भर अर्हं पाठशाला की कक्षाएँ लेने वाले विद्वानों एवं विदुषियों के समर्पण को भी भुलाया नहीं जा सकता।

सभी के सहयोग से जिनवाणी की प्रभावना हेतु नित नई योजनाएँ बनती रहें एवं इसी प्रकार प्रचार–प्रसार होता रहे – यही मंगल भावना है।

– **डॉ. संजीवकुमार गोधा, निर्देशक : अर्हं पाठशाला**

NEW ADMISSION OPEN
अर्हं पाठशाला
विषय आपका
समय आपका
भाषा आपकी
फोन आपका
सम्पर्क करें – 8058890377
रजिस्ट्रेशन एवं अन्य जानकारी हेतु विजिट करें – PTST.LIVE

चित्रों के आयने में अर्हं फेस्ट

जयपुर का ऐतिहासिक विशाल जुलूस

15 अप्रैल को भगवान महावीरस्वामी की जन्म जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित जयपुर के प्रसिद्ध भव्य जुलूस में मन्दिरों, महिला मण्डलों, विद्यालयों-महाविद्यालयों द्वारा प्रस्तुत झांकियों में अर्हं पाठशाला की ओर से जीवन के मूल्यों को समझाने वाली **'कल आज और कल' (Past Present and Future)** विषय पर अत्यन्त सुन्दर झांकी का आयोजन किया गया, जिसमें पाठशाला ना जाने वाले बच्चों की दुर्दशा व पाठशाला जाने के बाद उनके अनुशासित जीवन का चित्रण कर पाठशाला की उपयोगिता का संदेश दिया। जिसे राजस्थान जैन सभा द्वारा खूब सराहा गया एवं लगभग 50 झांकियों में **'प्रथम स्थान'** प्रदान किया गया। झांकी का संयोजन प्रतीतिजी मोदी ने व सर्वज्ञ जैन गुढ़ाचन्द्रजी ने किया। साथ ही पण्डित रिमान्शुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री व पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री के संगीतमय मधुर भजनों ने जुलूस को यादगार बना दिया। अर्हं पाठशाला व महाविद्यालय के विद्यार्थियों का उत्साह भी देखने लायक रहा। इसप्रकार नाचते-गाते-बजाते हुए महावीर जयंती के जुलूस में सम्मिलित होकर सभी ने आनन्द का लुफ्त उठाया।

'जैसी करनी वैसी भरनी' - नुक्कड़ नाटिका

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष (ज्ञाता कक्षा) के छात्रों ने **'जैसी करनी वैसी भरनी'** नामक नुक्कड़ नाटक के माध्यम से उपस्थित समुदाय को कर्म-सिद्धान्त का पाठ पढ़ाया, जिसे सभी ने बहुत सराहा। ज्ञातव्य है कि नाटक का लेखन महाविद्यालय के छात्र समर्थ जैन हरदा ने किया।

मन-मोहक भव्य पालना-झूलन

14 अप्रैल को रात्रि में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर बालक महावीर के पालना-झूलन का कार्यक्रम रखा गया। पालना उद्घाटनकर्ता श्री तेजस्वीजी सांगवी मुम्बई एवं श्री शांतिलालजी अमेरिका रहे तथा सर्वप्रथम पालना-झूलन का सौभाग्य श्री श्रीकान्ताजी पुत्रश्री शैलेन्द्रजी सेठी व जय-जवान कॉलोनी महिला मण्डल ने प्राप्त किया। श्री कमलजी-उषाजी पाड़लिया इन्दौर एवं श्री अखिलजी-चारूजी जैन इन्दौर ने समीप बैठकर पालने की सुरक्षा का सौभाग्य प्राप्त किया। तत्पश्चात् सभी लोगों ने धूमधाम से भक्तिभाव के साथ नृत्य करते हुए बालक महावीर को पालना झूलाकर कार्यक्रम का भरपूर आनन्द लिया।

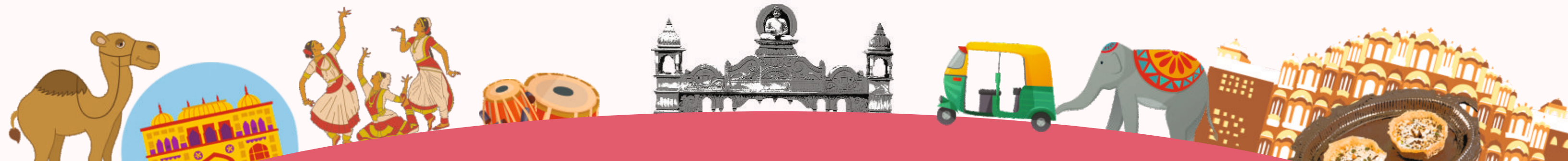

प्रसिद्ध जैन मन्दिरों व धरोहर के दर्शनार्थ भ्रमण

15 अप्रैल को प्रातःकाल 05:30 बजे जयपुर के प्राचीन मंदिरों के दर्शनार्थ 11 बसों का काफिला रवाना हुआ। सर्वप्रथम पण्डित प्रवर टोडरमलजी की कार्यस्थली श्री दिगम्बर जैन पंचायत तेरापंथ बड़ा मंदिर के दर्शन के पश्चात् डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने बताया कि यह विश्व का एकमात्र ऐसा मंदिर है जहाँ विगत 300 वर्षों से प्रवचन की शृंखला अनवरत रूप से चल रही है। यही वह मन्दिर है, जहाँ पण्डित प्रवर टोडरमलजी नियमित प्रवचन किया करते थे। उन्होंने पण्डित टोडरमलजी की कलम, दवात, चश्मा आदि अनेक सामग्रियाँ दिखाई साथ ही पण्डित सदासुखदासजी कासलीवाल द्वारा रचित रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा द्वारा लिखित अष्टपाहुड़ की भाषा वचनिका आदि अनेक ग्रन्थों की मूल प्रतियों के दर्शन कराए।

इसके पश्चात् पण्डित प्रवर टोडरमलजी द्वारा हस्तलिखित मोक्षमार्ग प्रकाशक के दर्शनार्थ यात्री श्री आदिनाथ दिगंबर जैन (भधीचंदजी के) मंदिर पहुंचे। वहाँ पण्डितजी की इस कालजयी रचना को साक्षात् देखकर अत्यधिक प्रशंसा व्यक्त की एवं गुमानपंथ सम्बन्धी अनेक जानकारियाँ प्राप्त हुई।

जयपुर के प्रसिद्ध टूरिस्ट प्लेस हवामहल, जलमहल व आमेर किले को देखते हुए यह यात्रा आमेर के प्रसिद्ध जैन मंदिरों के दर्शनार्थ पहुंची। वहाँ सर्वप्रथम श्री दिगम्बर जैन मंदिर सांवलाजी गए। सूत्रों से पता चला कि यहाँ के मूलनायक भगवान नेमिनाथ कि प्रतिमा सांवली होने से यह अतिशय क्षेत्र सांवलाजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पश्चात् श्री दिगम्बर जैन कीर्ति-स्तम्भ की नसियाँ पहुँचे। जहाँ पूजन, भक्ति, डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा सेमिनार व इन्दौर पंचकल्याणक में पधारने के विशेष आमंत्रण के साथ यात्रा 2 बजे सम्पन्न हुई।

'भरत के अंतर्द्वन्द्व' नाटक का भव्य मंचन

15 अप्रैल को रात्रि में बिरला ऑडिटोरियम में **'भरत के अंतर्द्वन्द्व'** नामक नाटक उसके लेखक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की साक्षात् उपस्थिति में रंगमंच पर खेला गया। नाटक के मंचन के पूर्व डॉ. भारिल्ल ने बताया कि इस नाटक में उन्होंने भरत और बाहुबली के अपार प्रेम को दर्शाया है और समाज के समक्ष भरत के प्रति एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि इस भरत के व्यक्तित्व को भी मैंने गढ़ा है। दुनिया इसे भविष्य में 'हुकमचंद के भरत' के नाम से याद रखेगी। नाटक का निर्देशन प्रसिद्ध निर्देशक श्री तपनजी भट्ट एवं संयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया, जिसे देखने जैन समाज के वरिष्ठ महानुभावों सहित लगभग 1300 साधर्मी पधारे। सभी ने नाटक के संदेश को समझते हुए उसके प्रति प्रसन्न व्यक्त की। नाटक के अंत में चारों ओर एक ही स्वर सुनाई दे रहा था।

लड़ना नहीं है सीखना; नहीं लड़ना सीखना है

नाटक के प्रारम्भ में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संस्था के उद्देश्य एवं उसकी कार्यप्रणाली से सभा को परिचित कराया। मंच पर पंचतीर्थ जिनालय के चित्र का अनावरण श्री यतीन्द्रकुमारजी जैन ओसवाल ने एवं सभा का कुशल संचालन पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल ने किया।

अर्हं की बात : दादा के साथ

16 अप्रैल को दोपहर में **'अर्हं की बात : दादा के साथ'** नामक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत अर्हं पाठशाला के विद्यार्थियों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल से साक्षात् अपने प्रश्नों के उत्तर जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने डॉ. भारिल्ल के जीवन से जुड़े अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों एवं तत्त्वज्ञान के रोचक तथ्यों सम्बन्धित लगभग 40 प्रश्न पूछे, जिनका डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अत्यधिक प्रसन्नता व सरलता से जवाब दिया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

अर्हं के विद्यार्थियों के साथ इन्ट्रेक्शन

16 अप्रैल को रात्रि में विदुषी प्रतीतिजी मोदी के संचालन में अर्हं इन्ट्रेक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत अर्हं पाठशाला किसप्रकार से लोगों के जीवन में नए बदलाव ला रही है एवं लोग अर्हं पाठशाला से किसप्रकार से प्रभावित होकर जुड़ रहे हैं इन सभी बातों पर परस्पर में चर्चा हुई। इस समारोह में ऑनलाइन माध्यम से अमेरिका, कनाड़ा, इटली, लन्दन, दुबई आदि अनेक देशों के अर्हं विद्यार्थी एवं अध्यापक सक्रियता से जुड़े रहें।

अद्भुत व आश्चर्यकारी : अर्हं एक्टिविटी

14 एवं 16 अप्रैल को दोपहर में विदुषी प्रतीतिजी मोदी द्वारा विविध रोचक एक्टिविटी कराई गई, जिसके अंतर्गत श्रावक v/s श्राविका, सुधि सुधार पढ़ो सदा, कथा कहानी, जिनवाणी सुन लो रे आदि एक्टिविटी के माध्यम से विद्यार्थियों को सुसंस्कारित किया। इसप्रकार लेखन, स्मरण और वाचन पर आधारित एक्टिविटीज कराई गयी, जिसमें सभी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

एक मुलाकात : शास्त्रियों के साथ

17 अप्रैल को प्रातःकाल श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा संचालित **'शास्त्री ओपन डे'** नामक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से जीवन व उनके भविष्य से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे गए एवं किसप्रकार महाविद्यालय उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन ला रहा है? किसप्रकार महाविद्यालय उनकी महत्त्वाकांक्षाओं पर खरा उतरा? इन सभी विषयों को समेटे हुए प्रेरणास्पद संवाद हुये। जिसका उद्देश्य जीवन की दिशा बदलने वाले महाविद्यालय व जीवन की दशा बदलने वाली शास्त्री डिग्री की उपयोगिता से परिचित कराना रहा।

अर्हं फेस्ट में आयोजित विशिष्ट सेमिनार

महावीर आउट-ऑफ-डेट नहीं, अप-टू-डेट हैं।

14 अप्रैल को महावीर जयंती के अवसर पर पालना झूलन के पूर्व तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का **'अहिंसा महावीर की दृष्टि में'** विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ, जिसके अंतर्गत उन्होंने भगवान महावीर आउट-ऑफ-डेट नहीं; अपितु अप-टू-डेट हैं - इस बात को सिद्ध किया। उन्होंने अनेक तर्क, युक्तियों एवं उदाहरणों से बात सिद्ध करते हुए कहा कि व्यक्ति अपनी विचारधारा से अप-टू-डेट होता है और भगवान महावीर के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक हैं उनकी आवश्यकता वर्तमान में ही नहीं भविष्य में भी सदा काल रहेगी; इसलिए भगवान महावीर अप-टू-डेट ही हैं।

हम जैन - नाम से, काम से या भाव से??

15 अप्रैल को आमेर स्थित नसियाँजी में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने फेस्ट के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जैन तीन प्रकार के होते हैं - 1. नाम से 2. काम से 3. भाव से। नाम से जैन वे हैं जिनके नाम के आगे जैन लगा है, जो जैन कुल में जन्म लेने से जैन हैं और दूसरे प्रकार के जैन वे हैं जो अर्हं पाठशाला से जुड़कर अथवा जैनाचार को पालकर अपने कार्यों से भी जैन हो गये हैं। अब आवश्यकता है भाव से जैन होने की। भाव से जैन वे होते हैं जो भगवान महावीर के सिद्धान्तों को जीवन में उतारकर महावीर बनने का प्रयत्न करते हैं। जिन धर्म को जीते हैं। ऐसे भाव से जैन ही सच्चे जैन होते हैं। ऐसे सच्चे जैन चारों गतियों में हो सकते हैं।

चलो.... महावीर बनते हैं

16 अप्रैल को प्रात: आत्मख्याति मर्मज्ञ डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने भगवान महावीर के विगत 10 भवों में घटित घटनाओं का स्मरण करते हुए तात्त्विक सिद्धांतों को उद्घाटित किया एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सहज रहने की कला सिखाई। उन्होंने कहा कि महावीर के सिद्धांतों को जीवन में अपनाएंगे, तो स्वयं महावीर बन जाएंगे।

धर्म बंधन का नहीं, आनंद का नाम है।

16 अप्रैल को प्रातः मोटिवेशनल स्पीकर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संस्कारों का महत्त्व समझाते हुए कहा कि बच्चों को बचपन में ही संस्कार दे देना चाहिए, उनके बड़े होने का इंतजार करेंगे तो कल वे हमारे बाप बन जाएंगे। उन्होंने कहा कि हमें बच्चों पर धर्म थोपना नहीं है, अपितु समझाना है; क्योंकि धर्म बंधन का नहीं, आनंद का नाम है।

क्या हमने कभी भगवान के दर्शन किए हैं?

16 अप्रैल को रात्रि में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने सेमिनार में बताया कि हमने भगवान के दर्शन तो अनेक बार किए है; लेकिन भगवान को अपने में स्थापित कभी नहीं किया, वरन अपनी उल्टी मान्यताओं को भगवान में स्थापित कर दिया। तात्पर्य यह था कि हम तो वीतरागी हुए नहीं, भगवान को रागी अवश्य बना दिया।

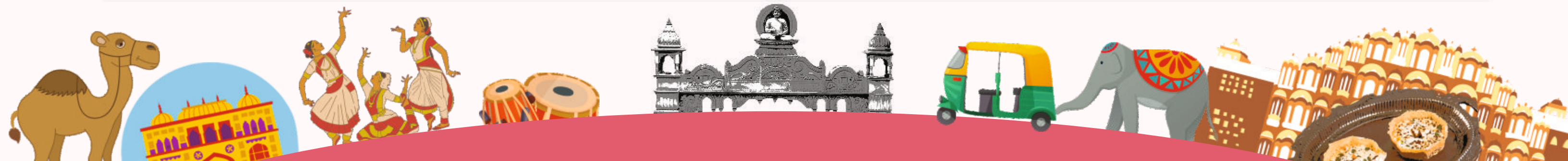

अर्हं फेस्ट में भव्य सम्मान समारोह

अर्हं फेस्ट के अद्वितीय आयोजन का अंतिम सत्र तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल सहित ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, अर्हं पाठशाला के निर्देशक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। अर्हं पाठशाला की त्रि-वर्षीय अवधि में जिन अध्यापकों ने अपना बहुमूल्य समय दिया उनमें से उपस्थित पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर, श्रीमती चारूजी जयपुर, श्रीमती पूजाजी शास्त्री इन्दौर, सुश्री अनुभूतिजी शास्त्री लूणदा, सुश्री अनुजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित मयंकजी शास्त्री बण्डा, पण्डित पवित्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित संभवजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित शाश्वतजी शास्त्री भोपाल, सुश्री अवधिजी शास्त्री वाशिम, सुश्री भाविकाजी शास्त्री आदि को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के कर कमलों से स्मृति चिह्न व अनुग्रह पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। साथ ही जिन विद्यार्थियों ने पाठशाला में व्यवस्थित अध्ययन कर श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया उन्हें मैडल व प्रमाण पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि अर्हं पाठशाला की समस्त गतिविधियों में सक्रिय प्रदर्शन हेतु जुनियर विद्यार्थियों में ऐषणा पाटनी को **'स्टार ऑफ अर्हं'** की उपाधि व सीनियर विद्यार्थियों में श्रीमती मधुजी बगड़ा को **'डायमण्ड ऑफ अर्हं'** की उपाधि से सम्मानित किया गया। सत्र संचालक पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन ने अर्हं पाठशाला की सफलता का पूरा श्रेय अर्हं अध्यापकों को दिया। **3 वर्षों से अर्हं पाठशाला के संचालन में तन-मन से लगे आकाशजी शास्त्री अमायन को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा सम्मानित किया गया।**

अर्हं पाठशाला के मार्गदर्शक व निर्देशक के साथ अर्हं अध्यापक

कार्यक्रम के प्रमुख सारथी

अर्हं फेस्ट के इस विशिष्ट आयोजन की विशिष्ट सफलता में पण्डित पीयूषजी शास्त्री, विदुषी प्रतीतिजी मोदी नागपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पण्डित रिमान्शुजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अखिलजी शास्त्री, पण्डित शाश्वतजी शास्त्री, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री, पण्डित संयमजी पुजारी, पण्डित निमित्तजी इन्दौर, पण्डित आर्जवजी मोदी आदि **महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।**

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल व आकाशजी शास्त्री अमायन के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 अप्रैल 2022

प्रति,